CELEBRATING 25 Years of Excellence in Training

# अंगार

समस्त कोयला परिबार का अपना मासिक मुख-पत्र ● आई.आई.सी.एम. द्वारा प्रकशित

अगस्त 2018 ● वर्ष 24 ● अंक 01

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै

iicm आई.आई.सी.एम.

# वैज्ञानिक भाषा : हिन्दी

**प्रस्तावना :**

विश्व भाषाओं के संदर्भ में हिन्दी एक वैज्ञानिक लिपि है जो सर्वश्रेष्ठ, सरल एवं बोधगम्य है। इसकी लिपि आदर्श है। इसमें भावों को मूर्त रुप में प्रकट करने की अद्भूत एवं अभूतपूर्व क्षमता है। हिन्दी की देवनागरी लिपि का प्रत्येक चिन्ह एक अक्षर है। लचीलापन इसकी विशेषता है। देवनागरी कलात्मक लिपि है। इसमें एक ध्वनि के लिए एक ही चिन्ह है। इसके एक चिन्ह से एक ही अक्षर का बोध होता है। देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है। इसकी वर्णमाला में वर्णों का क्रम अत्यंत वैज्ञानिक है।

**वैज्ञानिक वर्णमाला :**

हिन्दी में पूरे अक्षरों को दो वर्गों में बाँटा गया है – स्वर और व्यंजन। पहले सभी स्वर आते हैं और इसके बाद सभी व्यंजन। स्वरों में लघु स्वर पहले और दीर्घ स्वर बाद में रखा गया है। व्यंजनों का विभाजन भी अति सूक्ष्म और सफल है। विश्व की किसी भी भाषा में ऐसा विभाजन नहीं है। व्यंजन संयोग अंकित करने की पद्धति पूर्ण और उच्चारण के अनुरुप है। उच्चारण के अनुरुप ही लिखा जाता है।

हिन्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है विज्ञान-सम्मत प्रणाली से वर्णमाला के अक्षरों का क्रम। व्यंजन वर्ग समूह – मुँह के अंदर से लेकर उच्चारण स्थान के अनुसार और मुँह के बाहर ओष्ठ तक आकर कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दंत्य, ओष्ठ्य में पाँच स्पर्श वर्णों के वर्ग में बाँटा गया है। इसके बाद प्रत्येक वर्ग में अघोष अल्पप्राण (यथा-क), अघोष महाप्राण (यथा-ख), घोषवत् अल्पप्राण (यथा-ग) और घोषवत् महाप्राण (यथा-घ) – इस तरह वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम् वर्ण सजाए गए हैं। स्पर्श वर्ण के बाद अंत:स्थ वर्ण (य, र, ल, व) और उसके बाद ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) का स्थान है।

**एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिन्ह :**

हिन्दी में एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिन्ह है। यह विशेषता विश्व की अन्य भाषाओं, जैसे अंग्रेजी तथा उर्दू आदि में नहीं है। अंग्रेजी में 'क' ध्वनि के लिए कई वर्ण प्रयुक्त होते हैं - जैसे Cat में C, Kite में K, Queen में Q, Christ में Ch, Black में CK। इस प्रकार एक ही ध्वनि को पाँच या छह प्रकार से लिखा जा सकता है। जबकि हिन्दी की विशेषता यही है कि यदि क लिखा गया है तो क ही पढ़ा जाएगा। उर्दू भाषा में ज ध्वनि के लिए पाँच वर्ण है - जे, जुवाद, जोए और जाल। किस शब्द मे ज ध्वनि के लिए कौन-सा वर्ण प्रयुक्त होगा, यह तय कर पाना तब तक संभव नहीं होगा जब तक प्रयोक्ता उस शब्द के परंपरागत रुप से परिचित न हो। उर्दू में अ ध्वनि के लिए दो वर्ण हैं - अलिफ और ऐ। अलिफ से आदमी लिखा जाता है और ऐ से औरत जिसमें कोई वैज्ञानिकता नहीं है।

**लिपि चिन्ह का नाम ध्वनि के अनुरुप :**

हिन्दी की एक बड़ी विशेषता यह है कि जो लिखित चिन्ह की पहचान है, वही उच्चारण है। क को उसी रुप में पहचाना जाता है और वही उसका उच्चारण है। पतंग में प की ध्वनि और कलम में क की ध्वनि मूल रुप से वही रहती है। अंग्रेजी में यह वैज्ञानिकता नहीं के बराबर है। जैसे H की मूल ध्वनि में ए+च की ध्वनि है किंतु शब्द में प्रयुक्त होने पर यह ह या अ की ध्वनि देता है। जैसे Horse (हौर्स) में ह और Hours (अवर्स) में अ शब्द का उच्चारण होता है जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

**वर्णमाला में पर्याप्त लिपि चिन्ह :**

शुरु से ही हिन्दी भाषा में चिन्ह की आवश्यक संख्या मौजूद हैं। हिन्दी एक विकासशील भाषा है। अत: आवश्यकतानुसार नए चिन्ह भी लिए जाते रहे हैं। हिन्दी की वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं। इतने अधिक वर्ण विश्व की किसी भी भाषा में नहीं हैं। अंग्रेजी में आज तक सिर्फ 26 वर्ण हैं, जिसमें अलग-अलग स्थानों पर पाँच स्वरों (A, E, I, O, U) की व्यवस्था है जबकि ध्वनियाँ 42 से ज्यादा हैं। वास्तव में अंग्रेजी में 12 मूल स्वर और 14 व्यंजन हैं। लेकिन अंग्रेजी भाषा में कुल स्वर ध्वनियाँ 21 हैं। इस प्रकार 25 व्यंजन ध्वनियों को प्रकट करने के लिए अंग्रेजी के पास केवल 14 ध्वनि चिन्ह हैं। अत: उन ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए अन्य ध्वनियों का संयोग करना पड़ता है। उदाहरण के लिए हिन्दी के श, च, ड, ढ, थ आदि ध्वनियों के लिए अंग्रेजी में कोई स्वतंत्र सांकेतिक चिन्ह नहीं है।

अंग्रेजी और उर्दू में महाप्राण की ध्वनि के लिए अलग से लिपि चिन्ह नहीं है। उर्दू में हे वर्ण के चिन्ह को और अंग्रेजी में H वर्ण को जोड़कर महाप्राण बनाया जाता है। जैसे G+H मिलकर घ ध्वनि देते हैं, किंतु छ ध्वनि के लिए CHH लिखना पड़ता है। इसके कारण उच्चारण में भी कभी-कभी समस्या पैदा होती है। हिन्दी में अलग महाप्राण वर्ण हैं, जैसे - ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ आदि।

उर्दू के स्वरों के अंकन का यथेष्ठ और असंदिग्ध प्रबंधन नहीं है। उर्दू की लिपि में

## सँरक्षक की कलम से

कोयला परिवार की महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्था आई.आई.सी.एम. द्वारा प्रकाशित प्रमुख मासिक पत्रिका 'अंगार' अपने नाम को सार्थक करते हुए गर्मजोशी के साथ स्वदेशी की पुनीत भावना को समृद्ध एवं सुदृढ़ करता रहा है।

साथ ही देश की उन्नति एवं प्रगति के लिये अपेक्षित वैचारिक ऊर्जा की भी पूर्ति करता रहा है।

यह पत्रिका निरंतर अपने प्रगति-पथ को प्रशस्त करता हुआ आगे बढ़ता रहे, संरक्षक की हैसियत से मैं इसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ और अपनी हार्दिक सद्भावना एवं मंगल कामना व्यक्त करता हूँ और आश्वस्त करता हूँ कि यथामति जो सहयोग मुझसे संभव होगा, मैं सदा-सर्वदा आपकी सेवा में समर्पित करता रहूंगा।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने नए कलेवर में समस्त कोयला परिवार के जीवन स्तर को 'मानव-मूल्यों के प्रति और समर्पित करेगा तथा मानव जीवन के निम्न लिखित मूल भावना को सही ढंग से उजागर करने में सफल होगा :-

**"मत कहो यह सुभग जीवन,**
**एक ढलती शाम है।**
**मत कहो यह सुघड़ जीवन,**
**विपदा-व्यथा का नाम है।**
**मुस्कुराते हों सुमन इतने जहाँ,**
**बंधु यह तो पुष्प का उद्यान है।**

**-ताराकांत मिश्र**

## 'कोल-इंडिया' के नौनिहालों (प्रबंध-प्रशिक्षुओं) के लिये !

'कोल-इंडिया' के 'नवल-पुष्प' , तुम्हें धरती माँ का स्नेह निमंत्रण !
'कोल-इंडिया' के 'धवल-पुष्प' , तुम्हें धरती माँ का स्नेह निमंत्रण !
'कोल-इंडिया' के 'विरल-पुष्प' , तुम्हें धरती माँ का स्नेह निमंत्रण !

'धरती-माँ' की कोख भरी है, विपुल खनिज संपदाओं से।
मिल-जुल कर है इसे बचाना, कुटिल-जनों से, विपदाओं से।
'सफल-प्रबंधक' बन धरणी की, प्रसव-वेदना करना है कम ......
कोल-इंडिया के नवल पुष्प, तुम्हें, धरती-माँ का स्नेह-निमंत्रण ! (1)

रखना होगा ध्यान कि धरती-माँ की कम हो प्रसव-पीड़ा !
उत्खनन-संग 'पर्यावरण-संरक्षण' हो ज्यों कृष्ण मीरा !
आई.आइ.सी.एम. के देवालय में, हमें लेना है आज यह प्रण !
'कोल-इंडिया' के नवल पुष्प, तुम्हें धरती-माँ का स्नेह-निमंत्रण ! (2)

नैसर्गिक-जीवन जीने को, प्रेरित करते है ये खान!
प्रकृति के अबूझ रहस्यों को खोलते है ये खान!
दिल करता है तन-मन-सारा जीवन, कर दूँ इसको अर्पण !
कोल-इंडिया के 'नवल -पुष्प', तुम्हें धरती माँ का स्नेह-निमंत्रण ! (3)

जी.के.वैष्णव
वरीय प्रबंधक(पर्यावरण)
आई.आई.सी.एम.

क्रमबद्धता नहीं है। ध्वनि और लेखन में सामंजस्य नहीं है। इसमें स्वरों की संख्या का अभाव है। उर्दू भाषा में मात्र तीन स्वर हैं और ध्वनि चिन्हों की संख्या 36 है।

**उच्चारण में प्रत्येक लिपि चिन्ह का उपयोग :**

हिन्दी की यह विशेषता है कि इसके प्रत्येक लिपि चिन्ह का प्रयोग उच्चारण में होता है। हिन्दी में अब अनावश्यक स्वर हटा दिए गए हैं जैसे - ॠ और ॡ आदि। परन्तु अंग्रेजी के कुछ शब्दों में अभी भी कुछ ऐसे लिपि चिन्हों का प्रयोग किया जाता है जिनका उच्चारण में कोई स्थान नहीं है जैसे - Listen और Often में t का उच्चारण नहीं होता है। Psychghlghgy और Budget में अक्षर कुछ है और उच्चारण कुछ और। फारसी और उर्दू में कुछ ऐसे लिपि चिह्न भी प्रयुक्त होते हैं जिनका उनकी वर्णमाला में स्थान नहीं हैं, जैसे - बिलकुल के लिए बिलाकुल लिखा जाता है पर पढ़ा जाता है बिलकुल।

**मात्रा एवं वर्ण चिन्हों में भिन्नता :**

हिन्दी एक ध्वनात्मक भाषा है। इसकी वर्णमाल बड़ी वैज्ञानिक है। इसमें स्वर की मात्रायें अलग हैं। लघु और दीर्घ मात्राओं का भेद सुस्पष्ट है। यदि किसी स्वर को किसी व्यंजन के साथ मिलाकर लिखना है, तो उसकी मात्रा लगा दी जाती है, पूरा स्वर नहीं लिखा जाता। प्रत्येक व्यंजन के साथ अ स्वर मिला होता है जैसे ज = ज् + अ। इस प्रकार हिन्दी आक्षरिक भाषा है। अंग्रेजी में लिखे शब्द Kamal को कमल, कमाल, कामल भी पढ़ा जा सकता है। हिन्दी में ऐसा नहीं होता। मात्राओं के कारण हिन्दी में लिखने में स्थान की भी बचत होती है।

**सुव्यवस्थित वर्णमाला :**

हिन्दी के वर्णमाला में ध्वनियों का मुँह से उच्चारण में उपयोग होने वाले स्थानों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। पहले स्वरों के लिए लिपि चिह्न हैं, बाद में व्यंजनों के लिए। स्वरों में भी लघु और दीर्घ स्वरों के लिए अलग-अलग वर्ण हैं, जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। अंग्रेजी, अरबी और फारसी में स्वर और व्यंजन अलग-अलग नहीं बल्कि मिले हुए हैं। हिन्दी का प्रत्येक वर्ण चाहे वह स्वर हो या व्यंजन उसका निर्माण एक विशिष्ट स्थान तथा स्थिति में होता है। वर्णो को कंठ, तालु, मूर्धा, दंत एवं ओष्ठ से निकले वाली ध्वनि के आधार पर वर्गीकृत कर इसे पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की गई है जो इस प्रकार है :

| | |
|---|---|
| कंठ्य ध्वनि | क, ख, ग, घ, |
| तालव्य ध्वनि | च, छ, ज, झ , ञ |
| मूद्र्धन्य ध्वनि | ट, ठ, ड, ढ, ण |
| दंत्य ध्वनि | त, थ, द, ध, न |
| ओष्ठ्य ध्वनि | प, फ, ब, भ, म |
| अंत:स्थ व्यंजन | य, र, ल, व |
| ऊष्म व्यंजन | श, ष, स, ह |
| उत्क्षिप्त व्यंजन | ड़, ढ़ |
| संयुक्त व्यंजन | क्ष, त्र, ज्ञ, श्र |

हिंदी के चारों संयुक्त व्यंजनों – क्ष(क+ष), त्र(त्+र), ज्ञ(ज्+ञ) और श्र(श्+र) का आधार भी वैज्ञानिक है।

**अक्षरों के लिखावट का मानकीकरण :**

हिन्दी आरंभ से ही एक विकासशील भाषा रही है। समय-समय पर इसमें आवश्यकतानुसार संवर्धन और परिवर्धन होता रहा है। नई ध्वनियों के अनुकूल ही इसके वर्णों में बदलाव आते रहे हैं। इसके कुछ वर्णों में पहले एकरुपता नहीं थी और वे कई तरह से लिखे जाते थे। अब उनका एक मानक रुप निश्चित कर दिया गया है। जैसे -

| पुराना रुप | मानक रुप |
|---|---|
| रव | ख |
| रा। | ण |
| ळ | ल |
| ञ्प्र | अ |

हाल ही में भारत सरकार की संस्था भारतीय मानक ब्यूरो ने देवनागरी लिपि एवं हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण की दिशा में नई पहल की और इसका मानकीकरण 29 अगस्त 2012 को विधिवत् लोकार्पण किया।

**सरल एवं स्पष्ट अक्षरों की लिखावट :**

अंग्रेजी और फारसी की तुलना में हिन्दी की वर्णमाला अधि परिष्कृत, विकसित और सरल है। अंग्रेजी की वर्णमाला तीन प्रकार की है जबकि हिन्दी की वर्णमाला सिर्फ एक प्रकार की है। उर्दू सात विभिन्न प्रकार से लिखी जाती है। अत: उर्दू को लिखने और पढ़ने में कठिन समस्या है।

हिन्दी में एक वर्ण एक ही प्रकार से लिखा जाता है। अंग्रेजी में लिखे जाने वाले और पुस्तकों में छपने वाले रुपों में भिन्नता है। दूसरे, उनमें छोटे (Small) तथा बड़े (Capital) लिपि चिन्हों में भिन्नता है। इस प्रकार रोमन लिपि में लिखावट के अनुसार कुल 104 (26x4) अक्षर हो जाते हैं। जबकि हिन्दी में लिखावट के अनुसार भी मात्रा 52 अक्षर हैं।

**निष्कर्ष :**

हिन्दी की देवनागरी लिपि अपने सर्वाधिक गुणों के कारण केवल हिन्दी की ही लिपि नहीं है, बल्कि भारतीया संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में से संस्कृत, मराठी, नेपाली, बोडो, डोगरी तथा मैथिली भाषाओं की अधिकृत लिपि है। कोंकणी, सिंधी तथा संथाली भाषायें भी देवनागरी को अपना रही हैं। उर्दू का अधिकाँश साहित्य भी आज फारसी लिपि की अपेक्षा देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित हो रहा है। कुछ पंजाबी और गुजराती साहित्य भी इसी लिपि में लिखा जा रहा है। इनके अतिरिक्त 92 भाषायें और 22 बोलियाँ हैं, जिनकी अपनी कोई लिपि नहीं है। हिन्दी की देवनागरी लिपि इन भाषाओं के बीच

सेतु का कार्य कर सकती है। इसी प्रकार देवनागरी लिपि जावा, सुमात्रा, बालि आदि दक्षिण एशिया की भाषाओं के लिए भी अपनाई जा सकती है।

आज सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी ने अपनी श्रेष्ठता और वैज्ञानिकता विश्व के सामने सिद्ध कर दी है और इस भाषा को ही कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। विश्व की सक्षम भाषा के रुप में भी हिन्दी को उपयुक्त माना जा रहा है। भारत के सी-डैक ने कई सौफ़्टवेयर तैयार किए हैं जिनसे श्रुति-लेखन जैसे महत्त्वपूर्ण सौफ़्टवेयर हैं। अपने ध्वनात्मक और वैज्ञानिक गुणों के आधार पर हिन्दी कुछ नए परिवर्तनों और परिवर्धनों के साथ एक विश्व भाषा बनने की क्षमता रखती है।

**मनोज कुमार सिंह,**
**वरिष्ठ प्रबंधक(आई.ई.),**
**एन.सी.एल., सिंगरौली(म.प्र.)**

**"सच्ची घटना"**

# "अनोखा सुख"

बात चंद दिनों पहले की है जब मैं परेशानियों के दौर से गुजर रहा था। इसी दरम्यान मेरे बच्चे के मैट्रिक बोर्ड की परीक्षा शुरू होनी थी। चारों तरफ पढ़ाई का आलम था। सभी बच्चे तन-मन-धन से परीक्षा की तौयारी में जुट चुके थे।

परीक्षा के प्रथम दिन, मैं अपने बच्चे को लेकर परीक्षा केन्द्र, सुबह 9:30 बजे पहुंचा। केन्द्र के बाहर परीक्षार्थियों तथा अभिभावकों की अच्छी-खासी भीड़ थी। परीक्षा सुबह 10:00 बजे से 1:00 बजे तक होना था। परीक्षार्थियों के मन में एक अजीब सी घबराहट थी। पर्चे कैसे होंगे ? सभी प्रश्न समय के अन्दर पूरें होंगे या नहीं ? इत्यादि, कई प्रकार के प्रश्न इनके जेहन में उभर रहें थे। सभी बच्चे आपस में अपनी तैयारियोँ के विषम में एक दूसरोँके विचारोँका आदान-प्रदान कर रहे थे,तभी घंटी बजी। सभी परीक्षार्थियों को केन्द्र के अन्दर प्रवेश करने तथा आवंटित स्थानों पर बैठने का आदेश हुआ।

समय लगभग 9.45 हो रहे होंगे, सभी बच्चे अपनी कॉपियों में अपना नाम तथा रौल न. इत्यादि लिख रहें होंगे, तभी अचानक एक बच्ची (परीक्षार्थी) रोते हुए परीक्षा केन्द्र से बाहर निकली। आँसुओं की धार लगातार बही जा रही थी। उसकी भरी आँखें अपने अभिभावक को इधर-उधर तलाश रही थी। धड़कने ज्यादा तेज हो चुकी थी उसकी। लम्बी लम्बी साँसे ले रही थी वो। ऐसा लग रहा था कि मानों अब बेहोश होकर गिर पड़ेगी। वहाँ उपस्थित सभी अन्य अभिभावक उसकी रुलाई का कारण जानने को व्याकुल थे। बच्ची बहुत बेचैनी से अपने पापा को तलाश रही थी, जबकि उसके पापा सुबह 9:30 बजे ही उसे परीक्षा केन्द्र पर छोड़ कर अपने दफ्तर को जा चुके थे। अब उसकी उल्झने बढ़ती ही जा रही थी।

दरअसल उस बच्ची का परीक्षा केन्द्र शहर के दूसरे छोर पर स्थित था। सही ढंग से प्रवेश-पत्र नही पढ़ने की वजह से, गलत केन्द्र पर आ चुकी थी। स्वतंत्र परीक्षार्थी के रूप में फार्म भरने के कारण ही विद्यालय केन्द्र को अपना परीक्षा केन्द्र समझ बैठी थी। अब परीक्षा शुरू होने में मात्र 10 मिनिट बचें होंगे। बिना संकोच किये,मैं मानवता का फर्ज निभाते हुए उस बच्ची को अपनी मोटरसाइकिल पर बैठाकर शहर के दूसरे छोर पर स्थित परीक्षा केन्द्र तक पहुँचाने को तैयार हो गया। हलाँकि कुछ पल के लिए मुझे जैसे अनजान व्यक्ति के साथ जाने में वो झिझकी परन्तु वक्त की नजाकत को देखते हुए तुरंत जाने को तैयार हो गई। रास्ते में, मै बच्ची को ढाढस बढ़ाये जा रहा था कि नियत समय पर परीक्षा केन्द्र तक पहुँच जाओगी। 10 बजने में 2 मिनट रहे होंगे कि मैं उसे लेकर केन्द्र पर पहुँच गया। मुख्य द्वार पर पहुँचते ही कई अभिवाभाक गेटकीपर, कई महिलाएँ इत्यादि के व्यंग-बाण झेलने पड़े मुझे, कोई कहता - "कैसा गार्जियन है, इतनी देरी से परीक्षा केन्द्र पर अपने बच्चे को लाता है, इसे अपने बच्चे की कोई चिन्ता नहीं है।"तो कोई कह रहा था- "शायद शराब पीकर रात में सो गया होगा इसलिए देरी से नींद खुली होगी"। तो कोई कह रहा था - "बच्चे पैदा कर कर देते, परन्तु जिम्मेवारी निभाना नही जानते है लोग"। इत्यादि कई प्रकार के छिंटा-कसी झेलने पड़े। अब मैं किस-किस को सफाई हूँ कि "यह मेरी बच्ची नहीं है। मैं भी आपकी ही तरह हूँ। मेरा भी बच्चा अन्य केन्द्र में परीक्षा दे रहा है। इस नेक काम के एवज में मुझे मेरा दफ्तर भी छोड़ना पड़ा। एक दिन की छुटटी लेनी पड़ी है मुझे।"

कुछ समय के लिए मैं बिचलित सा हो गया था, परन्तु लोगों को जैसे ही हकीकत की जानकारी हुई, सभी ने मेरा हौसला वढ़ाया, मेरी तारिफ की, मेरा पीठ थप-थपाया। कुछ महिलाओं ने कहा- "भगवान आपका भला करें। आपका घर खुशियोँ से भर दें। आप ही जैसे लोगों से धरती टिकी हुई है," इत्यादि।

मुझे खुशी है कि मैनें एक अच्छा काम किया। शायद उस बच्ची में,मैं अपनी बच्ची का प्रतिबिम्ब देख रहा था। मानवता का भी यही तकाजा था। हर मनुष्य को स्वार्थ से उपर उठकर ऐसे ही कुछ सामाजिक कार्य करने चाहिए जिससे मानवता जिन्दा रह सके इस समाज में।

**(ब्रज बिहारी सिंह), रांची**

## कोयला उत्पादन

| | 2014 | | 2015 | | 2016 | | 2017 | | 2018 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कोयला उत्पादन | कोयला उत्पादन प्रतिषत में | कोयला उत्पादन | कोयला उत्पादन प्रतिषत में | कोयला उत्पादन | कोयला उत्पादन प्रतिषत में | कोयला उत्पादन | कोयला उत्पादन प्रतिषत में | कोयला उत्पादन | कोयला उत्पादन प्रतिषत में |
| नानकोकिंग (1) | 413.50 | 89.4 | 443.67 | 89.8 | 484.93 | 90.0 | 499.49 | 90.1 | 534.09 | 94.1 |
| कोकिंग (2) | 48.92 | 10.6 | 50.57 | 10.2 | 53.83 | 10.0 | 54.65 | 9.9 | 33.28 | 5.9 |
| **योग** | **462.42** | **100.00** | **494.24** | **100.00** | **538.75** | **100.00** | **554.14** | **100.00** | **567.37** | **100.00** |

1. असम ग्रेड कोल सहित 2. सेमी कोकिंग कोल एवं कमजोर कोकिंग कोल सहित

## कंपनी अनुसार विवरण

| कोयला उत्पादन | ईकाई | ई.सी.एल. | बी.सी.सी.एल. | सी.सी.एल. | एन.सी.एल. | डब्लू.सी.एल. | एस.ई.सी.एल. | एम.सी.एल. | एन.ई.सी. | सी.आई.एल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भूमिगत | मिलीयन टन | 8.60 | 1.08 | 0.41 | 0.00 | 4.95 | 14.46 | 1.04 | 0.00 | 30.54 |
| ओपन कास्ट | मिलीयन टन | 34.97 | 31.53 | 63.00 | 93.02 | 41.27 | 130.25 | 142.02 | 0.78 | 536.82 |
| **योग** | मिलीयन टन | **43.57** | **32.61** | **63.41** | **93.02** | **46.22** | **144.71** | **143.06** | **0.78** | **567.37** |
| **प्रेषण** | मिलीयन टन | **43.63** | **33.36** | **67.51** | **96.77** | **48.75** | **151.10** | **138.27** | **0.89** | **580.29** |

## कंपनी अनुसार- श्रमिक शक्ति (01.05.2018) विवरण

| कंपनी स्तर | ई.सी.एल. | बी.सी.सी.एल. | सी.सी.एल. | डब्लू.सी.एल. | एस.ई.सी.एल. | एम.सी.एल. | एन.सी.एल. | एन.ई.सी. | सी.एम.पी.डी.आई.एल. | डी.सी.सी. | सी.आई.एल. | कुल योग (कोलइंडिया) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अधिकारी | 2211 | 2137 | 2428 | 2500 | 3105 | 1888 | 1784 | 98 | 946 | 26 | 491 | 17614 |
| पर्ववेक्षक | 4181 | 3751 | 3295 | 5920 | 7493 | 3426 | 1791 | 235 | 496 | 172 | 38 | 30798 |
| कर्मचारी | 55287 | 42625 | 34958 | 37148 | 47323 | 17136 | 11517 | 1196 | 1942 | 122 | 400 | 249654 |
| **योग** | **61679** | **48513** | **40681** | **45568** | **57921** | **22450** | **15092** | **1529** | **3384** | **320** | **929** | **298066** |

स्रोत : कोल इंडिया वेबसाइट 06.08.2018.

## हमारी गतिविधियाँ / झलकियाँ

- **सेवानिवृत हुए**

श्री गौतम बिष्वास, जो आई.आई.सी.एम. में 'सब आर्डिनेट इंजीनियर' (ई एण्ड एम) के पद पर कार्यरत थे, 31 मार्च 2018 को सेवा निवृत हुए।

श्री गौतम बिष्वास जी को उनके कार्य के प्रति समर्पण एवं निष्ठा के लिये सदैव याद किया जाएगा।

- **"व्चक्तित्व को निखारने का अभिनव प्रयोग"**

'व्यावसायिक-प्रतिस्पर्धा के इस युग में समय के साथ चलने के लिये 'कोल इंडिया' के अधिकारियों के लिये भी प्रबंधकीय शिष्टाचार की बातों को जानना-समझना और आचरण में लाना अत्यंत आवष्यक है।

इसी को ध्यान में रखते हुए संस्थान के सभी प्रशिक्षण-कार्यक्रमों में प्रतिभागियों के व्यक्तित्व को निखारने हेतु 'प्रबंधकीय-शिष्टाचार' की विषेश कक्षाएँ लगाई जा रही है, जिसमें विषेशज्ञों द्वारा 'डाइनिंग-शिष्टाचार', ड्रेसिंग - शिष्टाचार, संभाषण - कला जैसे सूक्ष्म विषयों की सैद्धांतिक एवं ब्यावहारिक जानकारियाँ दी जा रही हैं।

कब, क्या, कैसे और कितना बोला जाए, कैसे चला जाय, विभिन्न अवसरों पर हमारा पहनावा कैसा हो, भाव-भंगिमा कैसी हो, डाइनिंग टेबल पर हमारा व्यवहार कैसा हो आदि-आदि । 'प्रबंधकीय शिष्टाचार' की कक्षाओं से प्रतिभागीगण न केवल अति उत्साहित है बल्कि उनमें नवीन ऊर्जा का संचार भी हो रहा है।

इन विषेश-कक्षाओं के माध्यम से सभी प्रतिभागी न केवल स्वयं में परिवर्तन ला सकेंगे बल्कि अपने अपने 'कार्य-स्थान' पर अपने अधिकारियों - कर्मचारियों के बीच स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए "प्रबंधकीय शिष्टाचार" की मूल भावना का विस्तार भी कर सकेंगे।

## सूक्तियाँ

1. एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है।

2. लोहा गरम भले ही हो जाए, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम कर सकता है।

3. किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं।

4. सबसे अधिक ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को समझकर उनका सुधार कर सकता हो।

## दो इंच की जीभ और हमारा स्वास्थ्य

अक्सर हमसे यह गलती होती है कि हम स्वास्थ्य की अपेक्षा स्वाद को ज्यादा महत्व देते है और स्वाद के लोभ में फंस कर स्वास्थ्य की उपेक्षा करते रहते हैं। परिणाम यह होता है कि दो इंच की जीभ के चक्कर में फंस कर लम्बे चौड़े शरीर को अस्वस्थ और रूग्ण करते रहते है जबकि असलियत यह है कि कोई भी स्वादिश्ट पदार्थ जीभ पर रखने पर जीभ चटखारे ले कर कहती है वाह! मजा आ गया तो गला पूछता है - क्या है? पेट जवाब देता है-कुछ नहीं सब बराबर है और वह जायकेदार पदार्थ आंतो से गुजर कर मलाषय में होता हुआ जब गुदा मार्ग से बाहर निकलता है तब उसकी जो स्थिति होती है उसे बताने की जरूरत नहीं, सब जानते हैं। इन सब बातों पर विचार करके हमें स्वाद से अधिक महत्व स्वास्थ्य को देना चाहिए ताकि हम स्वस्थ और निरोग बने रहें।

होता क्या है कि घर में कोई व्यंजन स्वादिष्ट बना हो तो हम खुद ही और मांग कर ज्यादा मात्रा में खा लेते हैं। ऐसा भी होता है कि मां या पत्नी ने बड़ी मेहनत और रूचि से कोई व्यंजन बना कर परोसा, आपने खा लिया तो पहले तो आपसे यह पूछा जाए कि कैसा बना? आप कहें बहुत बढ़िया तो कहा जाए बल्कि आग्रह किया जाए कि थोड़ा और लो न! अब दो स्थितियां हो सकती है। एक तो यह कि खुद आपकी ही इच्छा हो रही हो कि थोड़ा और खा लें या दूसरी यह कि आप की इच्छा न हो पर मां की ममता या पत्नी की प्यार से भरी मनुहार से विवश हो कर आपको थोड़ा तो और लेना ही पड़ेगा वरना कहा जाएगा कि व्यंजन पसन्द नहीं आया, अच्छा नहीं बना वगैरह वगैरह। इस तरह आप उनका लिहाज करें और इच्छा न होते हुए भी मजबूरन और खा जाएं। अब जो पहली प्लेट खाई थी वह तो ठीक थी पर दूसरी प्लेट भर कर और खा ली तो मामला भारी हो जाएगा। यदि व्यंजन भी भारी हुआ तो मानो करेला नीम पर चढ़ गया। पहली प्लेट तो खा कर हजम कर ही लेते और शरीर को लग भी जाता पर दो प्लेट या तीन प्लेट खा गये और हजम न कर सके तो सब गुड़ गोबर हो जाएगा इसलिए आयुर्वेद ने उपदेश दिया है कि "प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पाचन-शक्ति के अनुकूल मात्रा में ही आहार लेना चाहिए।" स्वस्थ रहने की दो मुख्य शर्तें हैं - कम खाना और गम खाना यानी पेट साफ़ रखना और दिमाग शान्त रखना।

**(राजीव कुमार द्विवेदी, रांची)**

## दादी के नुस्खे

1. श्वास खांसी - पुराना गुड़ और देशी कपूर समान मात्रा में मिला लें और चने बराबर गोलिया बना लें। सुबह शाम 4 - 4 गोली मुंह में डाल कर चूसने से श्वास खांसी रोग में लाभ होता है।
2. उल्टी (वमन) - बार बार उलटी हो रही हो तो एक गिलास पानी में अरहर की दाल 150 ग्राम मात्रा में डाल कर रख दें। जब दाल गल कर नरम हो जाए तब इसे मसल कर कपड़े से छान लें। इसे पीने से उलटी होना बन्द हो जाता है।
3. 'गुहेरी' का इलाज

आँखों की किसी एक पलक पर फुंसी उठ आती है जिससे बहुत कष्ट होता है। काफी दिनों तक यह ठीक नहीं होती और होती भी है तो दूसरी फुंसी उठ आती है। इसे 'गुहेरी' कहते हैं।

उपाय- आंख की पलक की फुंसी उठते ही तकलीफ होने लगती है, बस तभी आम के दो-तीन पत्ते तोड़ कर, डण्ठल को दबाएं। इससे डण्टल का रस निकलेगा। दर्पण के सामने खड़े होकर इस डण्ठल को फुंसी पर स्पर्श करें तो यह रस फुंसी पर लग जाएगा। बस, फुंसी मुरझा कर खत्म हो जाएगी और दुबारा भी नहीं होगी।

"अंगार " में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त अभिमत लेखकों के होते हैं, आई. आई. सी. एम. के नहीं - सम्पादक

• मुख्य संरक्षक : श्री एस.एन.सिंह • संरक्षक : डा. ताराकांत मिश्र • परामर्शी मंडल : श्री ए.के.मिश्र, डा. किरण
• संपादक : जी.के.वैष्णव • सह संपादक : दिव्यसानु पाण्डेय
प्रकाशक : इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ कोल मैनेजमेन्ट, काँके, राँची-834006। दूरभाष : (0651) 7112001 फैक्स (91-0651) 2451022
(निःशुल्क वितरण हेतु)